Paper (1)
B.A. III
VI Paper

महायान

हीनयान का निषेधात्मक दर्शन मात्र एक प्रचलित सर्वमान्य धर्म नहीं बन सकता था। जब बौद्ध धर्म ने सार्वभौम रूप धारण कर लिया और अपार जनसमूह ने उसे अपना लिया तो हीनयान से काम नहीं चल सकता था तो एक ऐसे धर्म की मांग हुई जो हीनयान से अधिक उदार रुचि का हो एवं न्यूनतम त्याग का आदर्श जनता के समक्ष प्रस्तुत कर सके। जब बौद्ध धर्म का प्रसार सारे भारत में और उसके बाहर हो गया था तब यह फैल गया, यह उस समय के प्रचलित धर्मों का सीधा विरोध नहीं कर सकता था, इसलिए इसने अपना स्थान अन्यान्य रूपों में बना लिया। महायान बौद्ध धर्म के निर्माण काल में देश के बाहर से निरन्तर कुछ खानाबदोश जातियों का आगमन होता रहा। राजाओं में सबसे अधिक शक्तिशाली कनिष्क ने स्वयं बौद्धमत को स्वीकार किया। शक्ति का केन्द्र पूर्व दिशा से पश्चिम दिशा में चला गया। पाली का स्थान संस्कृत ने लिया। उन असभ्य जाति के लोगों ने जो मिथ्या विश्वासों में डूबे हुए थे बिना उसमें परिवर्तन किए बौद्ध धर्म को नहीं अपनाया। उन्होंने उच्च श्रेणी के धर्म को अपनी समझ के स्तर पर नीचे उतार लिया। यद्यपि महायान बौद्ध धर्म एवं ब्राह्मणमत में सिद्धान्त सम्बन्धी अनेक प्रकार के मतभेद थे तो भी अपने अनुयायियों के लिए इसने जो रूप धारण किया वह नया एवं उस काल के लिए अभूतपूर्व नहीं था। महायान ने अनुभव किया कि यह जनसाधारण के मन पर केवल ऐसी अवस्था में ही अधिकार जमा सकेगा जबकि यह प्राचीन बौद्धमत के कुछ सिद्धान्त नितान्त भावनाशून्य विधानों का त्याग करके एक ऐसे धर्म का निर्माण करे जो लोगों के हृदय को प्रभावित कर सके।

Scanned with CamScanner

page 2

महायान

महायान बौद्ध धर्म हमारे सम्मुख ईश्वर, जीवात्मा एवं मानव-जीवन के लक्ष्य के विषय में निश्चयात्मक विचार प्रस्तुत करता है। "महायान अर्थात् बड़ी नौका- (या संसार सागर को पार करने का साधन) यह नाम इसके अनुयायियों ने हीनयान (छोटी नौका) को जो प्राचीन बौद्धमत है। महायानमत प्राणिमात्र के लिए और सब लोगों में आस्था प्रेम एवं ज्ञान के द्वारा मोक्ष प्राप्त करने की योजना प्रस्तुत करता है। जब हिनयान के अन्तर्गत सभी व्यक्तियों के धार्मिक सहायता अथवा पूजा की तृप्ति की आवश्यकता नहीं है वह मुख्य जीवन रूपी समुद्र पार करके दूसरे किनारे पर निर्वाण तक पहुंचाने के लिए नौका प्रस्तुत करता है। हीनयान उन निर्गुण ब्रह्म के उपासकों के अनगामी मार्ग की भांति अत्यन्त कठोर है जब महायान का भार हल्का है और मनुष्य के लिए इस विषय का विधान नहीं करता कि वह तुरन्त संसार और उसके साथ ही मनुष्य-मात्र के साथ सब प्रकार के सम्बन्धों का त्याग कर दें। महायान का कहना है कि धर्म के विधान में बुद्ध के सभी सन्तानों की नानाविध आवश्यकताओं की अनुकूलता रहती है जब हिनयान केवल उन्हीं के मतलब है जो धार्मिक-अभाव को बहुत दूर तक अपने पीछे छोड़ चुके हैं। हीनयान ज्ञान के संचय का ज्ञान देता है। और व्यक्तिगत मोक्ष की लक्ष्य रखता है एवं निर्वाण के-

Page 3

के रहस्य को निश्चयात्मक भाव में विकसित करने का निषेध करता है। महायान उतना ही अधिक बल प्रेम के ऊपर देता है। एवं प्रत्येक संज्ञासम्पन्न प्राणी के लिए मोक्ष के उद्देश्य का विधान करता है तथा निर्वाण के अन्दर एक मात्र ऐसी भावना को देखता है जो शून्य है। इन अर्थों में यह हमारे ~~व्यावहारिक~~ अनुभविक ज्ञान की सब प्रकार की मर्यादाओं से उन्मुक्त है।"

हीनयान का इसके विरोध में कहना है कि महायान केवल मानवीय प्रकृति की आवश्यकताओं को ही मिटा देता है। चाहे जो भी हो जहां ~~यह~~ यह संसार के त्यागों ज्ञान के द्वारा उच्चतम भक्ति की प्राप्ति का उदाहरण उपस्थित करता है। वहां महायान हमें संसार में भाग लेने की प्रेरणा प्रदान करता है। एवं सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में नवीन आदर्शों का प्रतिपादन भी करता है। अलौकिक, ~~साधन~~ शक्ति के अभाव और उसी के परिणामस्वरूप कल्पना के के लिए भी स्थान के अभाव के कारण और जीवन की समस्याओं को हल करने के निकृष्ट मार्ग के कारण, निर्वाण को शून्यता में परिणत कर देने एवं नैतिक जीवन की महत्ता में रख कर स्पष्ट बनाकर हीनयान केवल चिन्तनशील एवं जितेन्द्रिय व्यक्तियों का ही धर्म रह गया जबकि भावुक एवं आराधना की प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों के लिए एक नवीन प्रकार के अधिक विकसित ~~धर्म~~ रूप का उदय होना स्वाभाविक था।

Scanned with CamScanner

Page 4

बौद्ध धर्म की यह शाखा हीनयान शाखा से भिन्न थी। यद्यपि महायान शब्द कनिष्क के काल में प्रथम बार ही प्रयुक्त हुआ था।

जहाँ तक महायान का सम्बन्ध है इसके और भगवद्गीता के धर्म के मध्य कोई भेद प्रतीत नहीं होता। क्योंकि परमात्म विद्या-सम्बन्धी विचार सत्तामात्र का परम आधार गीता ग्रहण से मिलता है। जिस प्रकार कृष्ण अपने को सर्वोपरि बताते हैं उसी प्रकार बुद्ध को भी सर्वोपरि ईश्वर बना दिया गया। वह एक साधारण देवता नहीं हैं, वरन 'देवातिदेव' अर्थात् देवताओं के ईश्वर हैं। बुद्ध अनन्त काल से विद्यमान रहा है। मनुष्य जाति के प्रति उसका उत्कट प्रेम एक जलते हुए मकान के दृष्टान्त से दर्शाया गया है। सब प्राणी उसकी सन्तान हैं। सब जीवित प्राणी मेरी सन्तान हैं, संसार भयंकर ज्वाला व कष्टों से भरपूर है किन्तु मैं स्वयं उनको दुःखों से छुड़ाने के कार्य करूंगा। जो मेरे प्रति भक्ति एवं विश्वास रखते हैं मैं उनका कल्याण करता हूँ और जो मेरी शरण में आते हैं वे मेरे मित्र हैं।

Scanned with CamScanner